शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'विजन' उपन्यास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
राजीव गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

ख्यात लेखिका मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'विजन' में चिकित्सा के क्षेत्र में नगरीय परिवेश में स्थापित अस्पतालों और उसमें कार्यरत डाक्टर तथा विविध प्रकार के कर्मचारियों से सम्बन्धित आम जनता के शोषण का दृश्य चित्र उभरकर सामने आया है। उन्होंने इस रहस्य का पर्दाफाश किया है कि किस प्रकार यहाँ के 'पेइंग रोसेन्ट को घेरकर अस्पताल के बाड़े में हाँका जाता है और फिर उसका शिकार किया जाता है। चिकित्सालयों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र की आम जनता किस प्रकार शोषण का शिकार होती है। 'विजन' में इसका सजीव चित्र उभरकर सामने आया है। ग्रामीण परिवेश में जीने वाले पारंपरिक विचारधारा में पलकर मूल्यों के प्रति सचेत आम जनता डॉक्टर को भगवान से कम दर्जा नहीं देती, जबकि उनका अटूट विश्वास बार-बार खण्डित होता है और वे उन आधुनिक सोच वालों के बीच उपस्थित होकर आधुनिक तरीके से शोषण का शिकार होते हैं। 'नेहा' जैसी प्रतिभा सम्पन्न डॉक्टर को केन्द्र में रखकर मैत्रेयी पुष्पा ने इस उपन्यास में आज मानवीय संवेदना के विरुद्ध क्रमशः घनीभूत होते व्यावसायिकता के अंधेरे के विरुद्ध रोशनी तलाशने की कोशिश की है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'विजन' उपन्यास में अभिव्यक्त मानवीय संवेदनाओं की पड़ताल की गयी है।

बीज-शब्द : *समाज, संस्कृति, परंपरा, चिकित्सा-जगत, पुरुष-वर्चस्व, डॉक्टर , शोषण, हॉस्पिटल, भ्रष्टाचार*

भूमिका

मनुष्य की चित्तवृत्तियों के अनुसार समाज का स्वरूप परिवर्तित होता रहता है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की प्रत्येक गतिविधियों में मनुष्य की सक्रियता है। उसी सक्रियता के मध्य घटनाओं का बीज उत्पन्न होता है जो पौधा बनकर परिपोषित होकर अपना आकार बढ़ाता जाता है। कोई भी समाज एक विशेष संस्कृति को अविच्छिन्न क्रम से मानता आया है और उसके मध्य ही उसके सम्पूर्ण जीवन का निर्वाह होता आया है। संस्कृति के स्वरूप से ही समाज के भीतर मनुष्य की व्यावहारिकता का परिवर्धन होता है और उस परिवर्धन का क्रियात्मक रूप ही उस समाज को सभ्य-असभ्य घोषित करता है। शिष्ट और अशिष्ट लोगों से ही समाज निर्मित्त है। जहाँ उनकी मनोवृत्तियों के अनुसार आचारविचार प्राप्त होते हैं और वही आचार-विचार प्राचीन बोध और नवीन बोध में मूल्य बरकरार रखते हैं या जिस मूल्य का सृजन करते हैं वही संस्कृति का उदात्त स्वरूप है। संस्कृतियाँ देशकाल परिस्थिति के अनुसार किसी भी समाज का द्योतन करती हैं और वर्तमान सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में उन्हें रचनात्मक मूल्य प्रदान कर, रचनात्मक शक्ति

प्रदान कर, अनवरत परिपोषित और परिभाषित करती रहती हैं। नियमित निरन्तर प्रवाह के साथ विकासक्रम को अपनाती चली जाती है और उसी से हम सबकी पहचान होती है।

समाज परिवर्तन को स्वीकार करता आया है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समाज में रहने वाले व्यक्तियों की मनोवृत्तियाँ युग परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं और विरासत से प्राप्त सांस्कृतिक मूल्य उस परिवर्तन को एक रूप देने में लगे रहते हैं। उन मूल्यों को अपनाने और सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को परिपालित करने वाले मानव समाज को प्राचीन विरासत अतीत के गौरव और वर्तमान को देखकर चलना पड़ता है। जिसके चलते उस समय मानव-मस्तिष्क विचार करता है। उसी विचारण के अन्तर्गत एक द्वन्द्व पैदा होता है जो सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ को लेकर गहराता चला जाता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का द्वन्द्व देशकाल परिस्थिति और समाज में व्याप्त संस्कृति को प्रभावित करते हुए मानव के मन में स्वीकार-अस्वीकार की भावनाओं से ओत-प्रोत होता है, जहाँ मानव अपने तर्कों के आधार पर और अपने जीवन-स्तर पर उस सामाजिक सांस्कृति मूल्यों को अपनाता और छोड़ता है। समाज में व्याप्त भाँति-भाँति के विरोधाभास मनुष्य के जीवन-स्तर और संस्कृति के बीच का विरोधाभास मनुष्य के भीतर एक द्वन्द्व लेकर उपस्थित होता है और इसी द्वन्द्व पर कलम चलाता साहित्यकार अपनी रचना को एक विशेष आयाम देता है।

वैसे तो मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास की संस्कृति और सामाजिकता भारत के ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित है। जहाँ शहर एक झलक के रूप में ही उपस्थित हो पाता है। अधिकांश ग्रामीण-परिवेश निम्न-स्तरीय जीवन और अभावपूर्ण जीवनशैली का शिकार है, किन्तु 'विजन' उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश शहर और उच्च-शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों का परिवेश है। यहाँ मानवीय जीवन की रक्षा करने वाले डाक्टर और हास्पिटल हैं।

मानवीय संवेदनाओं का द्वंद्व

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास 'विजन' में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं झूठ फरेब पर टिकी हुई हास्पिटल और चिकित्सकों की दुनिया पर करारा आक्षेप करते हुए एक ऐसा दृश्य चित्र खींचा है जहाँ निजी स्वार्थ के लिए आर.पी. शरण जैसे नेत्र चिकित्सक अपने बेटे को आपरेशन में दक्ष बनाने के लिए एक प्रोफेसर की जान तक ले लेते हैं। यहाँ मानवीयता चित्कार उठती है और अपने निजी स्वार्थ के लिए ऐसे चिकित्सकों के प्रति विचार करने के लिए मजबूर करती है, जो चिकित्सा विज्ञान के विश्वास को तोड़कर आम जनता को ठगते हैं। यही नहीं यहाँ महिला चिकित्सकों की त्रासद जिंदगी का भी वर्णन है जो सामाजिक-सांस्कृतिक द्वन्द्वों में पड़कर पुरूष वर्चस्व की शिकार है, किन्तु उनका द्वन्द्व वहाँ टूटता है, जब ये क्रान्तिकारी रूप अख्तियार कर 'गलत' का विरोध कर अपने को सही साबित करने का और निजी जीवन में प्रतिस्थापित करने का प्रयास कर स्वयं को संतुष्ट करती हैं।

'विजन' उपन्यास में डॉक्टर एवं हॉस्पिटल पर आधारित भ्रष्टाचार के शिकार पात्रों की मानसिक स्थिति का दृश्य चित्र उपस्थित है, "डॉ. नेहा नयी सीखी लड़की अपने वरिष्ठ डॉक्टरों को उद्विग्न देखकर घबरा जाती थी, और मौत से हठ ठानने वाले परिजनों को यथा शक्ति समझाया करती थी - आदमी यहीं आकर रूक जाता है। आपने गीता पढ़ी है न, यहीं रूककर अपने शरीर रूपी कपड़े

शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बदलता है। मौत ही तो नये कपड़े लेकर आती है। देखो न हमारे ही अस्पताल के मैटरनिटी वार्ड में आज रात कितने-कितने मनुष्य चोला बदलकर जन्मे हैं। जन्म को कोई मृत्यु कैसे कहे? कहते हैं न मौत अमृतमयी होती है।''... ''सच में उनके मरीज के लिए मृत्यु नये वस्त्र लेकर आई थी जो इस हिमशीतल मृत्यु मत्ता के समक्ष खड़ा होता है और बार-बार उसके रेशमी जाल को उघाड़ फेंकता है, उसे ही तो डॉक्टर कहा जाता है। मौत की लड़ाई जीवन से नहीं, डॉक्टर से छिड़ती है, क्योंकि डॉक्टर गीता की नहीं जीवन बचा लेने की शपथ लेकर खड़ा होता है।''[1]

मरीजों के प्रति डॉक्टरों की लापरवाही और गरीब मरीजों के प्रति शोषण से जो परिणाम सामने आता है, वह अकाल मौत बन नेहा जैसी जिम्मेदार औरत को सोचने के लिए मजबूर कर देता है- ''एक लक्ष्य को अकाल मौत ने ग्रस लिया। रौशनी का अखण्ड सूर्य समा गया। अपने गोपन संकल्प का अचानक जाना...प्रतिष्ठा और दौलत के मद में डॉक्टर नेहाशरण का वजूद कब डूब गया ? जबकि यह तो सर्वोत्तम समय था कि साधन और साध्य का आपसी मेल बनता और एक सिलसिला हो जाता प्रकाश का, उजाले का, अंधों की रौशनी का।''[2]

सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं का चलता द्वन्द्व और डॉक्टर जीवन की परंपराओं का द्वन्द्व नेहा को उद्विग्न करता है, ''कैसी है यह दुनिया...कोई लम्बी पड़ती साँसों को सम पर लाना चाहता है तो कोई चेतन को पकड़ना चाहता है और कोई रोशनी को बाँध लेने की जिद ठानता है। काल का अतिक्रमण करने वाले लोग जूझते-जूझते लड़ाकू हो जाते हैं। मान-अपमान से परे, ऊँच-नीच से ऊपर उठकर लड़ने वाले डॉक्टर आलोक सिंह के इतने नजदीक आ गयी थी नेहा, कि आप कहते-कहते तुम पर आ गयी, और तुम कहते-कहते कब तू का सम्बोधन बन गया।''[3]

जहाँ शोषण की रणनीति डॉक्टरी परंपरा पर फैली होती है वहीं पारिवारिक जीवन में भी इन्हीं टूटी-फूटी पारंपरिक मान्यताओं से कलह उत्पन्न होता है - ''लोग बेटा पैदा होते ही एक काल्पनिक बहू की तस्वीर रच लेते हैं। उसके आने के क्षण की तमन्ना में खुशियाँ संजोये रहते हैं...लेकिन जब वह दिन आता है तो दूसरा मोर्चा खोल देते हैं। बहू से लड़के को बचाओ अभियान जोरों से चलने लगता है। ब्याह क्या होता है, सास-ससुर के लिए बहू चुनौती बनकर आ जाती है। सारी जिंदगी कड़वी- कड़वी ...''[4]

आभा जैसी सशक्त आधुनिक सोच वाली पढ़ी-लिखी नारी वैवाहिक जीवन के सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरा से अवगत कराती है। उन्हीं परंम्पराओं के भय से आशंकित हो नेहा जैसी सशक्त महिला कह उठती है -'' ब्याह करने की जरूरत क्या है आभा दी ? डॉक्टर बनकर अपना-अपना खर्च नहीं उठा सकते हम ? कौन-सी पढ़ी-लिखी लड़की आजकल आत्मनिर्भर नहीं ? हमारी माँयें नहीं कर पाई, दुखिया रहीं उनका दुःख देखकर ही तो सन्तान को प्रायश्चित करना होगा।''[5]

सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरा की भयावहता जो सदैव से स्त्रियों को ही मूल रूप में ग्रसती चली आ रही है, वहीं माँ-बाप के ईमानदारी सिखाने पर पुरूष को भी नहीं छोड़ती, ''बेटी उन बेइमानों से कहो, हम जैसे माँ-बापों को गोली से उड़ा दे। हमने अपने बेटे को ईमानदारी सिखा दी! उन जालिमों के लिए हत्या करना कौन-सी बड़ी बात है।''[6]

डॉक्टरी पेशे में भ्रष्टाचार फ़ैल गया है। यह वृत्ति आलोक जैसे ईमानदार-जिम्मेदार डॉक्टर को देश

से पलायन करने के लिए मजबूर कर देती है। आलोक के माँ-बाप बेटे के गम में तड़पने के लिए मजबूर हो जाते हैं। समाज-शोषक आर.पी. शरण सामाज की ईमानदारी और सांस्कृतिक परंपरा पर व्यंग्य करता है, "असल बात यह है कि तुम्हारी जैसी उम्र में आदमी को आदर्श बहुत लुभाता है। वह गठरी बाँधता जाता है। बाद में आदर्शों का यही वजन उसकी गर्दन तोड़ने लगता है। अजय कह रहा था, तुम्हारे कुछ कलीग्स का यही हश्र हुआ है।'[7] वहीं आधुनिक शिक्षित स्वच्छ विचारों की नेहा भ्रष्टाचार की पर व्यंग्य करती कहती है, "धोखे में तुम्हीं आओगे डॉ. शरण क्योंकि तुम्हारे जैसों के ये बेटे अपने दिमाग और सूझ-बूझ के लिए नहीं, शातिर बेवकूफियों के लिए जाने जाएँगे। इस देश का इतिहास तुमने ही रचा है, आगे भी तुम्हीं रचोगे, क्योंकि तुम अपने बेटों के रूप में खुद को छोड़ जाओगे जो संकीर्ण दृष्टि के मालिक होंगे और गलत समाधानों पर कब्जा कर लेने भर का माद्दा रखते होंगे।"[8]

आर.पी. शरण जैसे भ्रष्ट व्यक्ति जो स्वयं एक डॉक्टर हैं मरीजों की लाशों पर कमाए हुए पैसे से अजय जैसे अयोग्य व्यक्ति को डिग्री तो दिला देता है, किन्तु डॉक्टर जैसी प्रतिभा कहाँ से खरीदेगा। अजय जैसा बेटा, जो पैसों के बल पर डॉक्टरी की डिग्री खरीद समाज का रक्षक बनने के बजाय भक्षक बन जाता है, "एक मुजरिम, दूसरा सोमवार..- यही है हमारी स्थिति, यही है हमारी नियति...हम दूसरों के हाथ ऐसे ही मारे जाएँगे। इस आयी (आँख) सेन्टर की जड़ में दीमक का प्रवेश बहुत पहले हो गया जब हम न थे। अब हम कैसे बचाएँ ? एक पिता ऐसा महत्वाकांक्षी, ऐसा संकीर्ण हृदय और ऐसा संस्कार ग्रस्त हो सकता है कि बेटे को अपने रूप में ढालने के लिए महानाश की कीमत पर तैयार हो जाए ? अभ्यास कराने का ऐसा खतरनाक संकल्प कोई डॉक्टर कैसे कर सकता है ? नहीं तो खुद ही ब्लाक क्यों नहीं दिया ? क्या जानते नहीं थे कि अजय ...कमाल है कि एनेस्थिष्ट भी नहीं संभाल पाए।"[9]

जहाँ आर.पी. शरण जैसे डॉक्टर पैसों के बल पर अपने पुत्र अजय को डाक्टर बनाने के लिए डिग्री तो खरीद लेते हैं, किन्तु जब हॉस्पिटल में अजय को अपने पेशे का निर्वहन करना होता है तो वह सिर्फ बड़ी-बड़ी ज्ञान की बातें करता है प्रायोगिक स्तर पर वह ज्ञान-शून्य हो जाता है और चिकित्सा-जगत में ज्ञान-शून्य होना कितना खतरनाक होता है यह किसी से छिपा नहीं है, वहीं जब नेहा उनकी सहायता करने के लिए अपनी समर्थता जताती है तो उनका अहम आड़े आता रहा, जिसे वे विरासत में ढो रहे हैं। "अजय मेरे मना करने पर तनिक सी ठेस लगी होगी, तुमने इतनी बड़ी चोट खाना मंजूर कर लिया। मैं जानती हूँ कि पिता ने बेटे को अपने बाद के लिए ही हर तरह से पुख्ता किया है और बेटा पिता का आज्ञारूपी ऋण उतारने के लिए सेन्टर बचाने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। कैसा अच्छा ताल मेल है- राजा दशरथ और रामचन्द्र जी के जैसा, सतयुगी।"[10] चिकित्सा विज्ञान और उससे सम्बन्धित विडंबना का उद्घाटन करती नेहा की जिंदगी एक ऐसे द्वन्द्व से जूझ रही है, जहाँ सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ पति और ससुर के रूप में उसे अपने कर्तव्य पथ पर चलने में बाधक सिद्ध हो रही है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में 'नेहा' जैसी प्रतिभा सम्पन्न डॉक्टर को केन्द्र में रखकर मानवीय संवेदना के विरूद्ध क्रमशः घनीभूत होती व्यावसायिकता के अंधेरे के विरुद्ध रोशनी तलाशने की कोशिश की है।

शब्द–ब्रह्म

E ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 अप्रैल 2019

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा ने नेत्र चिकित्सकों के माध्यम से आधुनिक परिवेश में शिक्षित आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने वाले ऐसे परंपरावादी चरित्रों को सामने लाने का प्रयास किया है जिनका मुख्य 'विजन' सम्पत्ति और झूठा मान-सम्मान प्राप्त करना है। मरीजों की लाशों में सम्मान प्राप्त करने वाले चिकित्सकों की अयोग्यता का पर्दाफाश भी हुआ है। आर.पी. शरण और अजय शरण जैसे चिकित्सक परंपरावादी ढोल की पोल की तरह हैं तो वहीं आधुनिक दृष्टि रखने रखने वाली नेहा, आज सामाजिक पारंपरिक बन्धनों को तोड़कर समाज के प्रति त्याग और समर्पण के साथ समाज सेवा में अपनी पूरी जिन्दगी व्यतीत करना चाहती है, किन्तु परंपराओं को ढोते-ढोते रूढ़िगत मूल्यों के बीच पलने वाली आम जनता जब उनका तिरस्कार करती है और उनके चरित्र पर उंगली उठाती है, तो इनकी कर्मनिष्ठ प्रवृत्ति और निःस्वार्थ भावना आहत तो होती है। साथ ही उच्छृङखल समाज के प्रति इस आधुनिक बोध के साथ एक द्वन्द्व उत्पन्न होता है, जो पारंपरिक मूल्यों के प्रति गहरी संवेदना के साथ आधुनिकता बोध में संघर्ष की महागाथा बन जाती है। क्या यह वही लेखन शक्ति है लेखिका की जो अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों में खेत-खलिहान, बैलगाड़ी और रेत भरे दगरे और कहाँ महानगर के अस्पतालों के चमकते कारीडोर, जीन्स और एप्रेन पहने, स्टेथेस्कोप लटकाए डाक्टर-डाक्टरनियाँ, मोबाइल फोन और एसी गाड़ियाँ ये सभी शहरी समाज के बीच व्याप्त उस भ्रष्टाचार को देखने के 'विजन' प्रस्तुत करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के बीच नारी के इच्छा-शक्ति को पुरुष-वर्चस्व के सामने घुटने टेकना पड़ते है, किन्तु वर्चस्व को औंधेमुँह गिरना पड़ता है, जब आधुनिक परिवेश की नारी झूठ से पर्दा हटाकर सच को सामने लाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 विजन, वाणी प्रकाशन दिल्ली 2002, पृष्ठ 8

2 विजन, पृष्ठ 9

3 वही, पृष्ठ 34

4 वही, पृष्ठ 36

5 वही, पृष्ठ 37

6 वही, पृष्ठ 193

7 वही, पृष्ठ 201

8 वही, पृष्ठ 202

9 वही, पृष्ठ 208

10 वही, पृष्ठ 209

11 साक्षात्कार, जुलाई 1999, उपन्यास और स्त्री, विजय बहादुर सिंह।

12 स्त्री होने की कथा - विजय बहादुर सिंह, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली-2003, पृष्ठ 17

13 तथ्य और सत्य - दया दीक्षित, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-2010, पृष्ठ17